मेक्सिकन मिट्टी कलाकार

मेक्सिकन मिट्टी कलाकार

जोसफीना

वो आर्टिस्ट मेक्सिको में अपने स्टूडियो में काम करती थी. उसे जो कुछ भी बाहरी दुनिया में दिखता वो उन्हें मुलायम मिट्टी से बनाती.

एक सूरज...
दो परियां...
तीन घर...
उसका नाम है जोसफीना.
यह उस आर्टिस्ट की कहानी है.

मेक्सिकन मिट्टी कलाकार
जोसफीना

ओकाटीयन, मेक्सिको में हरेक इंसान को उस गुलाबी दीवार के बारे में पता था.

दीवार पर बनी मिट्टी की रंगीन आकृतियाँ को लोग, बाड़ के बाहर खड़े होकर निहारते थे.

दीवार के पीछे आँगन में माँ और पापा अगुइलर, मुलायम मिट्टी से कलाकृतियाँ बनाते थे. बेबी जोसफीना मज़े में छोटी-छोटी मिट्टी की आकृतियों को आँगन में बनते हुए देखती थी.

कुछ बड़ी होने पर वो भी अपने हाथ से मिट्टी का काम करने लगी.

जब पापा भट्टी में मिट्टी की चीज़ों को पकाने के लिए रखते तो जोसफीना उन्हें बड़े ध्यान से देखती. बाद में माँ, भट्टी में लकड़ियाँ डालती. फिर वो मिट्टी की कलाकृतियों को पकने के लिए पूरे सात घंटे इंतज़ार करते!

बाद में जोसफीना अपने बनाए छोटे-छोटे बच्चों, जानवरों और चिड़ियों को खुद अपने हाथ से रंगती थी.

धीरे-धीरे साल बीते.

माँ और पापा का देहांत हो गया.

पर जोसफीना मिट्टी का काम करती रही.

फिर जोसफीना का पहला बच्चा हुआ.

उसके बाद भी जोसफीना काम करती रही.

फिर एक-के-बाद एक करके उसके कई बच्चे हुए - कुल नौ.

उसके बावजूद जोसफीना मिट्टी का काम करती रही.
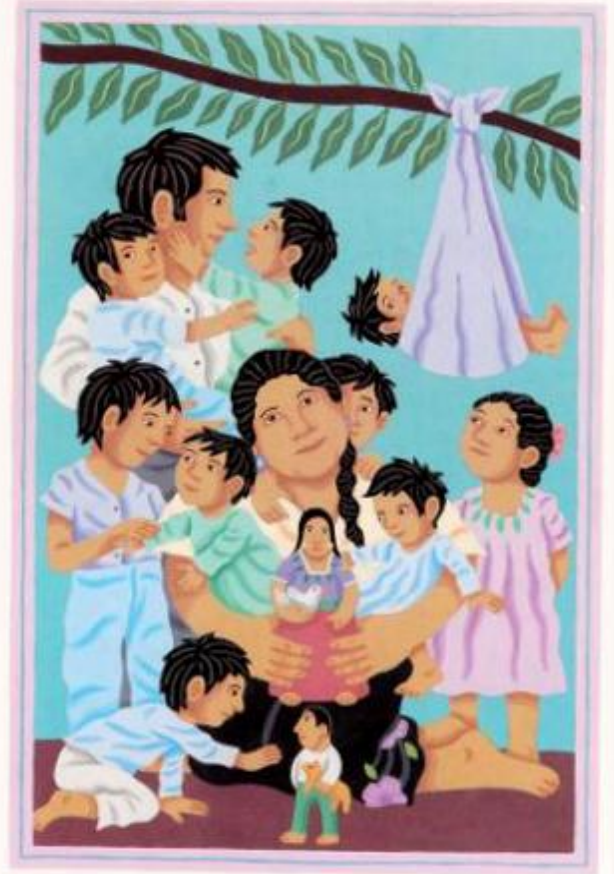
रोजाना वो घर के आँगन में जाती.

वहां उसका पति होसे, मिट्टी गूंथता और बच्चे उन कलाकृतियों को रंगते.

जोसफीना रोज़, मिट्टी से एक नई दुनिया रचती.

एक दिन उजाला होने से पहले जोसफीना ने आकाश को सूरज से चमकाया.

फिर उसने दो परियां बनाईं और उन्हें पंख दिए जिससे कि वे आसमान में उड़ सकें.
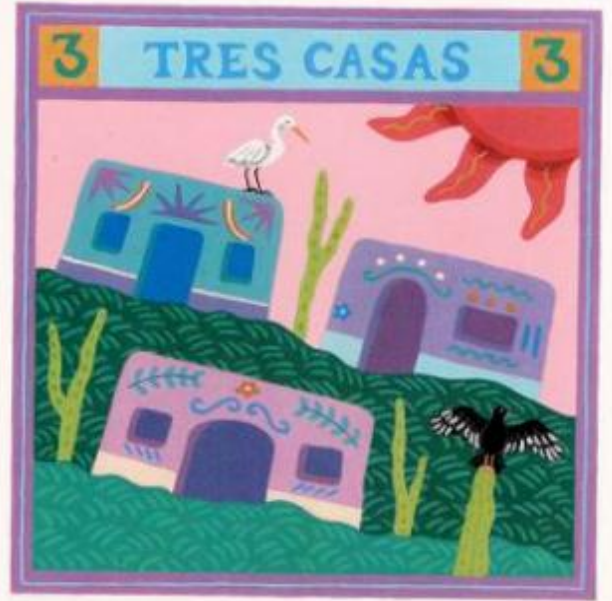
जोसफीना ने तीन मिट्टी के घरों में खिड़कियाँ और दरवाज़े लगाए जिससे कि घर में सूरज का प्रकाश आ सके.
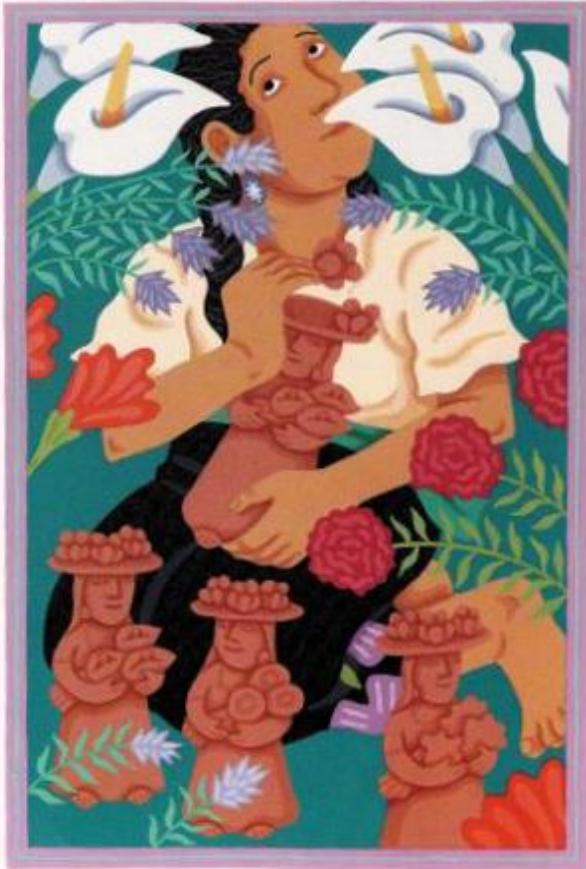
सूरज के प्रकाश में फूल खिल उठे.

जोसफीना ने फूलों की भीनी-भीनी खुशबू सूंघी.

फिर उसने फूल बेंचने वाली चार औरतें बनाईं.
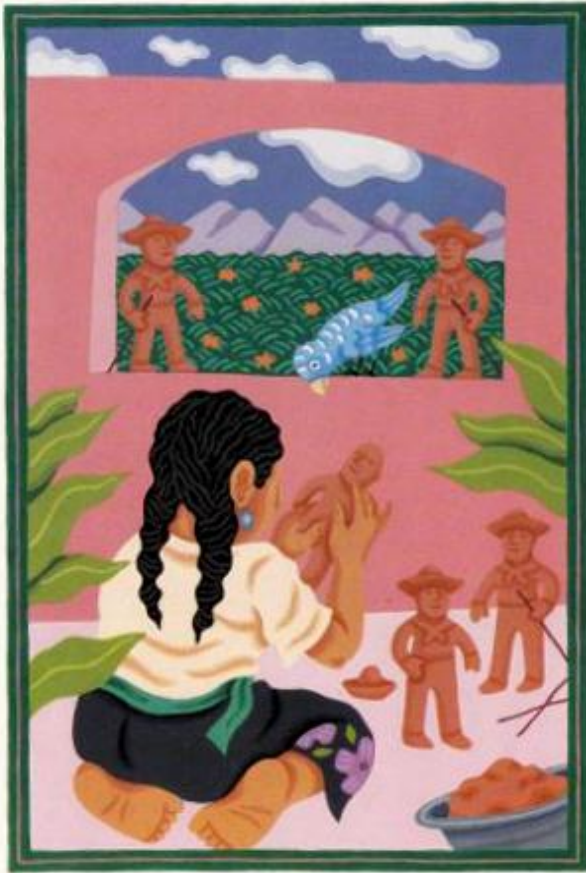
दोपहर की तपती धूप में जोसफीना के आँगन में पांच किसान खेतों में काम करते थे, बिल्कुल वैसे ही जैसे वो नीचे घाटी के खेतों में मेहनत करते.

जोसफीना ने छह माओं के लिए छह छोटे शिशु बनाए.

सभी औरतों ने बच्चों को अपने कलेजे से चिपकाया था.

स्थानीय संगीतकारों की धुनों को सुनकर जोसफीना का मन खुद नाचने और गाने का करता था!

जब सूरज ढलता और अँधेरा छाता तब जोसफीना के सातों संगीतकार अपनी धुनों से शाम का स्वागत करते.
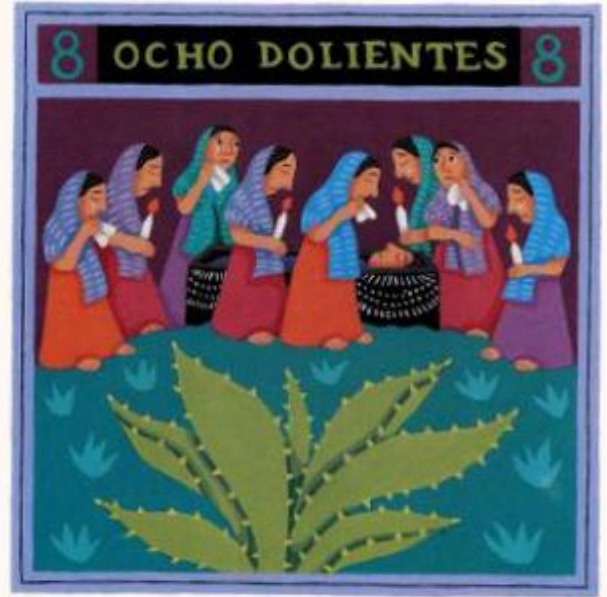
सांझ के समय जोसफीना अपने माँ-पापा को स्वर्ग में याद करती.

जोसफीना के साथ-साथ आठ मातम मनाने वाले लोग भी दुखी होते.

जोसफीना, एक कांटे से उनके आंसू बनाती.
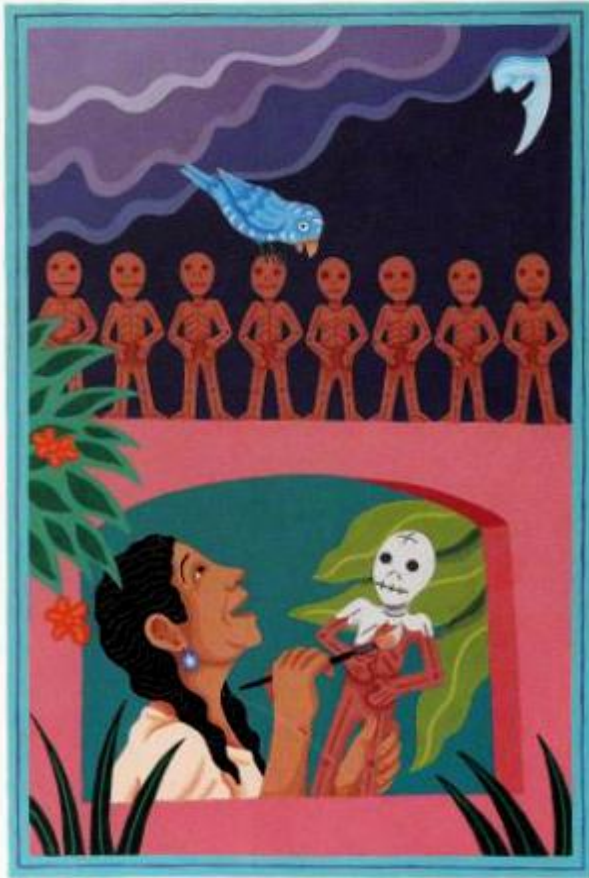
पर ज़िन्दगी चलती रहती.

जोसफीना अपने हाथ से बनाए नौ कंकालों पर हंसती.

उसे अब रात के सन्नाटे से कोई डर नहीं लगता था.

उस अँधेरी रात में, जोसफीना ने दस सितारे बनाए जिससे कि वे काले आसमान में टिमटिमा सकें.
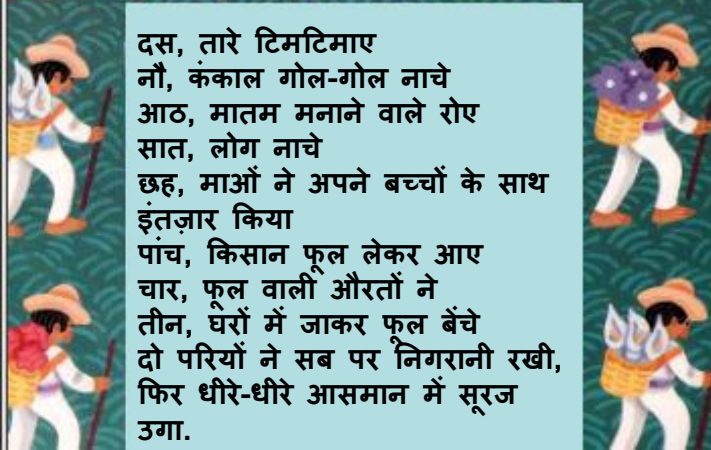
दस, तारे टिमटिमाए
नौ, कंकाल गोल-गोल नाचे
आठ, मातम मनाने वाले रोए
सात, लोग नाचे
छह, माओं ने अपने बच्चों के साथ इंतज़ार किया
पांच, किसान फूल लेकर आए
चार, फूल वाली औरतों ने
तीन, घरों में जाकर फूल बेंचे
दो परियों ने सब पर निगरानी रखी,
फिर धीरे-धीरे आसमान में सूरज उगा.

उसके बाद जोसफीना चैन से सोई.

मेक्सिकन मिट्टी कलाकार

वो आर्टिस्ट मेक्सिको में अपने स्टूडियो में काम करती थी. उसे जो कुछ भी बाहरी दुनिया में दिखता, वो उन्हें मुलायम मिट्टी से बनाती.

एक सूरज
दो परियां
तीन घर....
उसका नाम जोसफीना है.
यह उस आर्टिस्ट की कहानी है.